

भारत-पाक युद्ध: 1971

प्रलिम्स के लिये

राष्ट्रीय कैंडेट कोर, वर्ष 1971 का भारत-पाकस्तान युद्ध

मेन्स के लिये

भारत-पाक युद्ध के नहितारथ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में [राष्ट्रीय कैंडेट कोर](#) (NCC) ने 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' (भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ) के हिससे के रूप में [आज़ादी की वजिय शृंखला और संस्कृतियों का महासंगम](#) कार्यक्रम आयोजित करने की घोषणा की है।

- 'आज़ादी की वजिय शृंखला और संस्कृतियों का महासंगम' कार्यक्रम के तहत भारत-पाकस्तान वर्ष 1971 युद्ध के वीरों को पूरे देश में 75 स्थानों पर सम्मानित किया जा रहा है।
- संस्कृतियों का महासंगम नई दिल्ली में एक वशिष राष्ट्रीय एकता शविरि आयोजित करेगा, जिसमें देश भर के उम्मीदवार सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भाग लेंगे।



प्रमुख बदि

■ भारत-पाकसिस्तान युद्ध 1971 की समयरेखा:

- **राजनीतिक असंतुलन:** 1950 के दशक में पाकसिस्तान की केंद्रीय सत्ता पर पश्चिमी पाकसिस्तान का दबदबा था। पाकसिस्तान पर सैन्य-नौकरशाही का राज था जो पूरे देश (पूर्वी एवं पश्चिमी पाकसिस्तान) पर बेहद अलोकतांत्रिक ढंग से शासन कर रहे थे।
 - शासन की इस प्रणाली में बंगालवासियों का कोई राजनीतिक प्रतिनिधित्व नहीं था कति वर्ष 1970 के आम चुनावों के दौरान पश्चिमी पाकसिस्तान के इस प्रभुत्व को चुनौती दी गई थी।
 - **अवामी लीग की वजिय:** वर्ष 1970 के आम चुनाव में पूर्वी पाकसिस्तान के शेख मुजीबुर रहमान की अवामी लीग को स्पष्ट बहुमत प्राप्त था, जो प्रधानमंत्री बनने के लिये पर्याप्त था।
 - हालाँकि पश्चिमी पाकसिस्तान पूर्वी पाकसिस्तान के किसी नेता को देश पर शासन करने देने के लिये तैयार नहीं था।
 - **सांस्कृतिक अंतर:** तत्कालीन पश्चिमी पाकसिस्तान (वर्तमान पाकसिस्तान) ने 'याहया खान' के नेतृत्व में पूर्वी पाकसिस्तान (वर्तमान बांग्लादेश) के लोगों का सांस्कृतिक रूप से दमन करने की कोशिश की। उन्होंने पूर्वी पाकसिस्तान पर भाषा पहनावा-ओढ़ावा इत्यादि को लेकर तानाशाही रवैया अपनाना शुरू किया। ज़ातव्य है कि पूर्वी पाकसिस्तान बंगाल से काटकर बनाया गया था अतः यहाँ की भाषा मुख्यतः बंगाली थी जबकि, पश्चिमी पाकसिस्तान की भाषा मुख्यतः उर्दू थी।
 - राजनीतिक वार्ता वफिल होने के बाद जनरल याहया खान के नेतृत्व में पाकसिस्तानी सेना ने पूर्वी पाकसिस्तान के खिलाफ कार्रवाई शुरू करने का फैसला किया।
 - **ऑपरेशन सर्चलाइट: 26 मार्च, 1971 को पश्चिमी पाकसिस्तान ने पूरे पूर्वी पाकसिस्तान में ऑपरेशन सर्चलाइट शुरू की।**
 - इसके परिणामस्वरूप लाखों बांग्लादेशी भारत भागकर भारत आ गए। मुख्य रूप से पश्चिमी बंगाल, असम, मेघालय और त्रिपुरा जैसे राज्यों में कर्णोकाये राज्य बांग्लादेश के सबसे करीबी राज्य हैं।
 - विशेष रूप से पश्चिमी बंगाल पर शरणार्थियों का बोझ बढ़ने लगा और राज्य ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और उनकी सरकार से भोजन और आश्रय के लिये सहायता की अपील की।
 - **इंडो-बांग्ला सहयोग:** बांग्लादेश के स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वाली 'मुक्तविहानि सेना' एवं भारतीय सैनिकों की बहादुरी से पाकसिस्तानी सेना को मुँह की खानी पड़ी। ज़ातव्य है कि मुक्तविहानि सेना में बांग्लादेश के सैनिक, अर्द्ध-सैनिक और नागरिक भी शामिल थे। ये मुख्यतः गुरलिला पद्धति से युद्ध करते थे।
 - **पाकसिस्तानी सेना की हार: 16 दिसंबर, 1971 को पूर्वी पाकसिस्तान के मुख्य मार्शल लॉ प्रशासक और पूर्वी पाकसिस्तान में स्थिति पाकसिस्तानी सेना बलों के कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल आमरि अबदुल्ला खान नियाज़ी ने 'इंस्ट्रूमेंट ऑफ सरेंडर' पर हस्ताक्षर किये।**
 - द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सबसे अधिक 93,000 से अधिक पाकसिस्तानी सैनिकों ने भारतीय सेना और बांग्लादेश मुक्त सेना के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। भारत के हस्तक्षेप से मात्र 13 दिनों के इस छोटे से युद्ध से एक नए राष्ट्र का जन्म हुआ।
 - भारतीय हस्तक्षेप ने 13 दिनों में युद्ध को समाप्त कर दिया और इस प्रकार एक नए राष्ट्र का जन्म हुआ।
- ### ■ भारत के लिये भारत-पाकसिस्तान युद्ध का महत्त्व:
- **एक साथ दो मोर्चों पर युद्ध का खतरा:** भविष्य में कभी भी पाकसिस्तान से युद्ध होने पर भारत को दोनों मोर्चों से युद्ध का खतरा था। पूर्वी पाकसिस्तान के विद्रोह से भारत को इस खतरे को समाप्त करने का बहाना मलि गया।
 - यद्यपि वर्ष 1965 में पूर्वी मोर्चा काफी हद तक नषिक्रिय रहा, लेकिन इसने पर्याप्त सैन्य संसाधनों को अपने पास रोक लिया था जो पश्चिमी मोर्चे पर अधिक प्रभावशाली हो सकता है।
 - **गुटनरिपेक्षता की नीति में बदलाव:** भारत-पाकसिस्तान युद्ध अगस्त 1971 में भारत-सोवियत संधि पर हस्ताक्षर से पहले हुआ था, जिसने भारत को कूटनीतिक रूप से बढ़ावा दिया था।
 - इस जीत ने विदेशी राजनीति में भारत की व्यापक भूमिका सुनिश्चित की।
 - संयुक्त राज्य अमेरिका सहित दुनिया के कई देशों ने महसूस किया कि शक्ति संतुलन दक्षिण एशिया में भारत में स्थानांतरित हो गया है।

स्रोत: पीआईबी